يَٰبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَأَنِّي
فَضَّلۡتُكُمۡ عَلَى ٱلۡعَٰلَمِينَ ٤٧ وَٱتَّقُواْ يَوۡمٗا لَّا تَجۡزِي نَفۡسٌ
عَن نَّفۡسٖ شَيۡـٔٗا وَلَا يُقۡبَلُ مِنۡهَا شَفَٰعَةٞ وَلَا يُؤۡخَذُ مِنۡهَا
عَدۡلٞ وَلَا هُمۡ يُنصَرُونَ ٤٨ وَإِذۡ نَجَّيۡنَٰكُم مِّنۡ ءَالِ فِرۡعَوۡنَ
يَسُومُونَكُمۡ سُوٓءَ ٱلۡعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبۡنَآءَكُمۡ وَيَسۡتَحۡيُونَ
نِسَآءَكُمۡۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَآءٞ مِّن رَّبِّكُمۡ عَظِيمٞ ٤٩ وَإِذۡ
فَرَقۡنَا بِكُمُ ٱلۡبَحۡرَ فَأَنجَيۡنَٰكُمۡ وَأَغۡرَقۡنَآ ءَالَ فِرۡعَوۡنَ وَأَنتُمۡ
تَنظُرُونَ ٥٠ وَإِذۡ وَٰعَدۡنَا مُوسَىٰٓ أَرۡبَعِينَ لَيۡلَةٗ ثُمَّ ٱتَّخَذۡتُمُ
ٱلۡعِجۡلَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ وَأَنتُمۡ ظَٰلِمُونَ ٥١ ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنكُم
مِّنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ٥٢ وَإِذۡ ءَاتَيۡنَا مُوسَى
ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ ٥٣ وَإِذۡ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوۡمِهِۦ يَٰقَوۡمِ إِنَّكُمۡ ظَلَمۡتُمۡ أَنفُسَكُم بِٱتِّخَاذِكُمُ ٱلۡعِجۡلَ
فَتُوبُوٓاْ إِلَىٰ بَارِئِكُمۡ فَٱقۡتُلُوٓاْ أَنفُسَكُمۡ ذَٰلِكُمۡ خَيۡرٞ لَّكُمۡ
عِندَ بَارِئِكُمۡ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ٥٤
وَإِذۡ قُلۡتُمۡ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهۡرَةٗ
فَأَخَذَتۡكُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمۡ تَنظُرُونَ ٥٥ ثُمَّ بَعَثۡنَٰكُم مِّنۢ
بَعۡدِ مَوۡتِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ٥٦ وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ
ٱلۡغَمَامَ وَأَنزَلۡنَا عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَنَّ وَٱلسَّلۡوَىٰۖ كُلُواْ مِن طَيِّبَٰتِ
مَا رَزَقۡنَٰكُمۡۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ ٥٧

٥٧ وَإِذْ قُلْنَا ٱدْخُلُوا۟ هَـٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ فَكُلُوا۟ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ
رَغَدًا وَٱدْخُلُوا۟ ٱلْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا۟ حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطَـٰيَـٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ ٱلْمُحْسِنِينَ ٥٨ فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟
قَوْلًا غَيْرَ ٱلَّذِى قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ رِجْزًا
مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ٥٩

Theme	
Criminals will find no way out on the Day of Judgment. Israelites deliverance from Pharaoh's persecution. Israelites sin of worshipping the calf. Their repentance through slaying the culprits. Israelites who wanted to see Allah directly were put to death, then Allah gave them life again and provided them with heavenly food. Israelites discontent and disbelief.	रोज़-ए-क़यामत मुजरिमों के लिए कोई राह-ए-नजात नहीं होगी। बनी इसराईल को फ़िरऔन के ज़ुल्म-ओ-सितम से निजात दी गई। बनी इसराईल का बछड़े की पूजा करने का गुनाह। गुनहगारों को क़त्ल करके उनकी तौबा। जिन बनी इसराईल ने अल्लाह को सीधे देखने की ख़्वाहिश की, उन्हें मौत दी गई, फिर अल्लाह ने उन्हें दोबारा ज़िंदगी दी और उन्हें आसमानी खाना अता किया। बनी इसराईल की नाराज़गी और बे-ईमानी।
Tarjumani	
O Children of Israel! Remember My favors which I bestowed upon You; that I preferred you to all other nations of your time for My	ऐ बनी-इसराईल, याद करो मेरी उस नेमत को, जिससे मैंने तुम्हें नवाज़ा था और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की सारी कौमों पर फ़ज़ीलत

message. Guard yourselves against the Day on which one soul shall not avail another - no intercession shall be accepted, no ransom shall be taken and no help shall be given. Remember, when We delivered you from the people of Firaun (Pharaoh): they had subjected you to severe torment, killing your sons and sparing your daughters, you were facing a tremendous trial from your Rabb. And when We parted the Sea for you, taking you to safety. and drowned Firaun's people before your very eyes. Remember, when We made an appointment of forty nights with Musa (Moses), in his absence you took the calf for worship, thus committing a wicked transgression. Even then We forgave you, so that you might become grateful. Remember, when We gave Musa the Holy Book (Torah) and the criterion of right and wrong so that you might be rightly guided. Remember, when Musa returned with the	अता की थी | और डरो उस दिन से जब कोई किसी के ज़रा काम न आएगा, न किसी की तरफ़ से सिफ़ारिश क़बूल होगी, न किसी को फिदया लेकर छोड़ा जाएगा, और न मुजरिमों को कहीं से मदद मिल सकेगी | याद करो वह वक़्त जब हमने तुमको फिरऔनियों की गुलामी से नजात बख्शी | उन्होंने तुम्हें सख्त अज़ाब में मुब्तला कर रखा था, तुम्हारे लड़कों को ज़ब्ह करते थे और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा रहने देते थे और इस हालत में तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी | याद करो वह वक़्त, जब हमने समुन्दर फाड़कर तुम्हारे लिए रास्ता बनाया, फिर उसमें से तुम्हें बखैरियत गुज़रवा दिया, फिर वहीँ तुम्हारी आँखों के सामने फिरऔनियों को ग़रकाब किया | याद करो जब हमने मूसा को चालीस शबाना रोज़ की क़रारदाद पर बुलाया, तो उसके पीछे तुम बछड़े को अपना माबूद बना बैठे | उस वक़्त तुमने बड़ी ज्यादती की थी, मगर इसपर भी हमने तुम्हें माफ़ कर दिया कि शायद अब तुम शुक्रगुज़ार बनो | याद करो कि (ठीक उस वक़्त जब तुम ये ज़ुल्म कर रहे थे) हमने मूसा को किताब और

Divine Book, he said to his people: "O my people! You have indeed grievously wronged yourselves by taking the calf for worship; so turn in repentance to your Creator and slay the culprits among you; that will be best for you in His sight." He accepted your repentance; surely, He is the Forgiving, the Merciful. Remember, when you said: "O Musa! We shall never believe you until we see Allah with our own eyes," a thunderbolt struck you while you were looking on and you fell dead. Then We raised you up after your death; so that you might be grateful. even provided you the shade of clouds and sent down to you al-manna (sweet dish) and al-salwa (quail's meat) saying: "Eat of the good things, we have provided for you;" in spite of these favors your forefathers violated our commandments. However, by violating our commandments, they did not harm Us, but they harmed their own souls. Remember, when	फ़ुरक़ान अता की ताकि तुम उस के ज़रिये से सीधा रास्ता पा सको | याद करो जब मूसा (यह नेमत लिए हुए पलटा तो उस) ने अपनी कौम से कहा कि, "लोगो! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपने ऊपर सख्त ज़ुल्म किया है, लिहाज़ा तुम लोग अपने खालिक़ के हुज़ूर तौबा करो और अपनी जानों को हलाक करो, इसी में तुम्हारे ख़ालिक के नज़दीक तुम्हारी बेहतरी है |" उस वक़्त तुम्हारे खालिक़ ने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली, वह बड़ा माफ़ करनेवाला और रहम फरमानेवाला है | याद करो जब तुमने मूसा से कहा था कि हम तुम्हारे कहने का हरगिज़ यक़ीन न करेंगे, जब तक कि अपनी आँखों से अलानिया ख़ुदा को (तुमसे कलाम करते) न देख लें | उस वक़्त तुम्हारे देखते-देखते एक ज़बरदस्त कड़के ने तुमको आ लिया | तुम बेजान होकर गिर चुके थे, मगर फिर हमने तुमको जिला उठाया, शायद कि इस एहसान के बाद तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ | हमने तुमपर अब्र का साया किया, 'मन्न व सलवा' की गिज़ा तुम्हारे लिए फराहम की और तुमसे कहा कि जो पाक चीज़ें हमने तुम्हें बख्शी हैं, उन्हें खाओ (मगर तुम्हारे असलाफ़ ने जो

We said: "Enter this town and eat whatever you wish to your hearts' content; make your way through the gates, with humility saying; 'we repent.' We shall forgive you your sins and We shall increase the provisions for the righteous among you. But the wrongdoers changed Our Words from that which they were asked to say, so We sent down a scourge from heaven as a punishment for their transgression.	कुछ किया) वह हमपर उनका जुल्म न था, बल्कि उन्होंने आप अपने ही ऊपर जुल्म किया | फिर याद करो जब हमने कहा था कि "यह बस्ती (जो तुम्हारे सामने है) इसमें दाख़िल हो जाओ, इसकी पैदावार, जिस तरह चाहो, मजे से खाओ, मगर बस्ती के दरवाज़े में सज्दारेज़ होते हुए दाख़िल होना और कहते जाना, हित्ततुन, हम तुम्हारी खताओं से दरगुज़र करेंगे और नेकूकारों को मजीद फज्ल व करम से नवाजेंगे |" मगर जो बात उनसे कही गई थी, ज़ालिमों ने उसे बदलकर कुछ और कर दिया | आख़िरकार हमने जुल्म करनेवालों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया | यह सज़ा थी उन नाफरमानियों की जो वे कर रहे थे |
Tafsir	